पाठ 7: स्वयं प्रकाश (नेताजी का चश्मा)

पाठ का सार (Summary):
यह कहानी एक छोटे से कस्बे की है जहाँ नेताजी सुभाष चंद्र बोस की संगमरमर की मूर्ति लगी थी, परन्तु उस मूर्ति पर चश्मा नहीं था (शायद मूर्तिकार बनाना भूल गया था)। 'कैप्टन' नाम का एक देशभक्त, जो एक लँगड़ा चश्मेवाला था, नेताजी की बिना चश्मे वाली मूर्ति देखकर दुःखी होता था। वह रोज़ अपनी छोटी सी दुकान का कोई असली चश्मा मूर्ति को पहना देता था। जब हालदार साहब को यह बात पता चली तो उनके मन में कैप्टन के प्रति सम्मान पैदा हुआ। एक दिन कैप्टन की मृत्यु हो गई। हालदार साहब ने सोचा कि अब मूर्ति पर कभी चश्मा नहीं होगा, इसलिए उन्होंने उस चौराहे पर रुकना छोड़ दिया। परन्तु एक दिन उनकी नज़र मूर्ति पर पड़ी, जहाँ सरकंडे (reed/bamboo) का बना एक छोटा-सा चश्मा रखा था, जिसे शायद बच्चों ने बनाया था। यह देखकर हालदार साहब की आँखें भर आईं कि देश की आने वाली पीढ़ी (बच्चों) में भी देशभक्ति की भावना पूरी तरह जीवित है।

प्रश्न-अभ्यास (NCERT Solutions)

प्रश्न 1. सेनानी न होते हुए भी चश्मेवाले को लोग कैप्टन क्यों कहते थे?

> चश्मेवाला कभी सेना में नहीं गया था और न ही वह नेताजी की आज़ाद हिन्द फ़ौज का कोई सिपाही था। वह एक बूढ़ा, मरियल और लँगड़ा आदमी था। फिर भी लोग उसे 'कैप्टन' इसलिए कहते थे क्योंकि उसके अंदर नेताजी और देश के प्रति असीम सम्मान और देशभक्ति की भावना कूट-कूट कर भरी थी। वह नेताजी की बिना चश्मे वाली मूर्ति को अधूरा नहीं देख सकता था। देशभक्ति और आज़ादी के दीवानों के प्रति उसके इसी आदर भाव को देखकर लोग शायद व्यंग्य में या सम्मान से उसे 'कैप्टन' कहने लगे थे।

प्रश्न 2. **हालदार साहब ने ड्राइवर को पहले चौराहे पर गाड़ी रोकने के लिए मना किया था लेकिन बाद में तुरंत रोकने को कहा-**

(क) हालदार साहब पहले मायूस क्यों हो गए थे?

(ख) मूर्ति पर सरकंडे का चश्मा क्या उम्मीद जगाता है?

(ग) हालदार साहब इतनी-सी बात पर भावुक क्यों हो उठे?

(क) मायूस क्यों हुए: हालदार साहब यह सोचकर मायूस (उदास) हो गए थे कि कस्बे के चौराहे पर नेताजी की मूर्ति तो होगी, लेकिन उसकी आँखों पर चश्मा नहीं होगा। क्योंकि चश्मा पहनाने वाला 'कैप्टन' मर चुका था और कस्बे के बाकी लोगों में इतनी देशभक्ति नहीं थी कि वे मूर्ति पर चश्मा लगाएँ।

(ख) सरकंडे का चश्मा: मूर्ति पर बच्चों द्वारा बनाया गया सरकंडे का चश्मा यह उम्मीद जगाता है कि देश का भविष्य सुरक्षित हाथों में है। हमारी आने वाली पीढ़ी (बच्चों) के मन में भी देश और देशभक्तों के प्रति सम्मान की भावना मौजूद है। देशभक्ति केवल बड़ों तक सीमित नहीं है।

(ग) भावुक क्यों हुए: हालदार साहब को लगा था कि अब नेताजी की मूर्ति हमेशा बिना चश्मे के रहेगी। लेकिन जब उन्होंने मूर्ति पर बच्चों द्वारा बनाया गया सरकंडे का चश्मा देखा, तो उनकी निराशा अचानक असीम खुशी और उम्मीद में बदल गई। बच्चों की इस छोटी सी लेकिन गहरी देशभक्तिपूर्ण भावना ने उनके हृदय को छू लिया और उनकी आँखें भर आईं।

प्रश्न 3. **आशय स्पष्ट कीजिए- "बार-बार सोचते, क्या होगा उस कौम का जो अपने देश की खातिर घर-गृहस्थी-जवानी-जिंदगी सब कुछ होम देने वालों पर भी हँसती है और अपने लिए बिकने के मौके ढूँढ़ती है।"**

आशय: हालदार साहब इस बात से बहुत दुःखी थे कि आज के समय में समाज में देशभक्ति की भावना कम हो गई है। जिन स्वतंत्रता सेनानियों ने देश को आज़ाद कराने के लिए अपना घर-बार, जवानी और जीवन सब कुछ कुर्बान (होम) कर दिया, आज लोग उनका सम्मान करने के बजाय उन पर हँसते हैं (जैसे पानवाला कैप्टन का मज़ाक उड़ा रहा था)। आज के लोग केवल अपने स्वार्थ, पैसे और फायदे (बिकने के मौके) के बारे में सोचते हैं। जिस देश के नागरिक अपने शहीदों का सम्मान नहीं कर सकते, उस देश का भविष्य अंधकारमय है।

प्रश्न 4. पानवाले का एक रेखाचित्र प्रस्तुत कीजिए।

कस्बे के चौराहे पर पानवाले की एक दुकान थी। वह एक काला, मोटा और खुशमिजाज़ (हमेशा हँसने वाला) आदमी था। वह हर समय अपने मुँह में पान ठूँसे रहता था, जिसके कारण उसके दाँत लाल-काले हो गए थे। जब वह किसी बात पर हँसता था, तो उसकी बड़ी सी तोंद थिरकने (हिलने) लगती थी। वह बातों का धनी था और कस्बे की हर छोटी-बड़ी खबर रखता था। हालांकि वह मज़ाकिया था, लेकिन उसमें देशभक्ति की गहराई नहीं थी (इसीलिए वह कैप्टन का मज़ाक उड़ाता था)।

प्रश्न 5. "वो लँगड़ा क्या जाएगा फ़ौज में, पागल है पागल!" कैप्टन के प्रति पानवाले की इस टिप्पणी पर अपनी प्रतिक्रिया लिखिए।

कैप्टन के प्रति पानवाले की यह टिप्पणी अत्यंत दुर्भाग्यपूर्ण, अनुचित और असंवेदनशील है। कैप्टन भले ही शारीरिक रूप से लँगड़ा, कमज़ोर और ग़रीब था, लेकिन मानसिक रूप से वह एक सच्चा देशभक्त था। नेताजी की मूर्ति पर चश्मा लगाना उसकी देशभक्ति का एक महान उदाहरण था। पानवाले को उसकी शारीरिक कमज़ोरी और गरीबी का मज़ाक नहीं उड़ाना चाहिए था। जो व्यक्ति अपने देश के महापुरुषों का सम्मान करता है, वह पागल नहीं बल्कि सच्चे सम्मान का हक़दार है। पानवाले की यह टिप्पणी उसकी संकीर्ण (छोटी) मानसिकता को दर्शाती है।

Schoolnit